श्रीकृष्ण शर्मा

तम में कोई नरभक्षी है	चुप रहो मत!
यह सूरज है, चित्र फलक तक! पेड़ गये भीतर बंगलों में, सिर्फ प्रदूषण है कत्लों में! यह है आग कि जिससे बचना मुश्किल है अब उच्च फलक तक! शहर नहीं केवल राहें हैं, धुआं–धुंध है अफवाहें है, तम में कोई नरभक्षी है, घूर रहा जो मुझको अपलक! सुन्दरता केवल फरेब है, मन बांधे जो पाऽजेब है! सब डूबे उसके सम्मोहन, अपनी खुशियां सिर्फ ललक तक! यह सूरज है चित्र–फलक तक!	कुछ कहो मत, किन्तु ऐसे चुप रहो मत! दर्द है तो कुछ कराहो, दुःखी हो आंसू बहाओ, क्षोभ है, चीखो! मगर तुम इस तरह भीतर दहो मत! मौन कातिल के लिए बल शोर उसकी भीति पागल भीड़ का आकोश बन उभरो कि जो है मौत! लेकिन यों अकेले तुम सलीबों को सहो मत! कुछ कहो मत, किन्तु ऐसे चुप रहो मत!
('नये–पुराने' गीत अंक–3, सितम्बर–1998 से साभार)	सम्पर्क– सुकरी चर्च के पास जुन्नारदेव जिला–छिन्दवाड़ा